B.A. History, Part: I (Sub/Gen)
Paper: I, Unit: II, Date: 10.12.2020 Lecture No: 16

Lession: अशोक महान का मूल्यांकन

सम्राट अशोक प्राचीन भारतीय इतिहास का अद्वितीय शासक था, जिसने लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को चरितार्थ किया। वह अकेला ऐसा सम्राट था, जिसने राज्य के नैतिक और आध्यात्मिक आधार की पुरखा किया और पितृवत शासन किया। अशोक ने अपने 'धम्म' (धर्म) प्रचार के माध्यम से जन जीवन को शुचिता, प्रेम, दया, सहिष्णुता, शिष्टाचार, अनुशासन, शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व और बन्धुत्व भाव का पाठ पढ़ाया और अहिंसा का अमूल्य संदेश दिया। उसमें अपने पितामह चन्द्रगुप्त के शौर्य, हर्षवर्द्धन के धार्मिक उत्साह और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की परोपकारिता का अद्भुत समन्वय हुआ था, जिसने उसकी महानता को असाधारण बना दिया।

मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के संन्यास ग्रहण के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार राजा हुआ। संभवत: अशोक बिन्दुसार का ज्येष्ठ पुत्र नहीं था। अत: बिन्दुसार की मृत्यु के बाद मौर्य राजवंश की राजगद्दी हस्तगत करने के लिए अशोक को अपने भाइयों के प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा। बौद्ध परम्परा के अनुसार अशोक अत्यन्त ही क्रूर और निर्दयी वीर पुरुष था, जिसने अपने 99 भाइयों की हत्या कर मौर्य साम्राज्य की राजगद्दी पर अपना आधिपत्य कायम किया। इस किंवदंती की ऐतिहासिकता को सिद्ध करना मुश्किल है। परन्तु इतना सच है कि मौर्य राजपद उसे आसानी से हासिल नहीं हुआ था और वह पराक्रमी वीर था।

राजगद्दी पर आसीन होने के बाद उसने केवल एक युद्ध किया जो कलिंग युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। कलिंग राज्य की स्वतंत्रता का अपहरण करने के उद्देश्य से उसने भेरी घोष किया और कलिंग पर जोरदार आक्रमण किया। स्वयं अशोक के अनुसार इस युद्ध में कलिंग के एक लाख लोग मारे गए, डेढ़ लाख लोग बंदी बनाए गए और कई लाख लोग बर्बाद हो गए। कलिंग युद्ध के भीषण मैदान में बहती रक्त-धार, कलिंग के विनाश और लाखों बिखरे लवारिस शवों को देखकर अशोक का हृदय द्रवित हो गया और उसने जीवन पर्यन्त अहिंसा व्रत के पालन का संकल्प लिया। उसकी राजकीय नीति बिल्कुल ही बदल गई—भेरी घोष का स्थान धम्म घोष ने ले लिया। कलिंग युद्ध उसके राज्याभिषेक के आठ वर्ष बाद हुआ था।

हृदय परिवर्तन के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। परन्तु अपने व्यक्तिगत धर्म को उसने अपनी प्रजा पर न लाद कर मानव मूलक नैतिक मूल्यों की सूक्तियों बनाकर छोटी-बड़ी शिलाओं और प्रस्तर स्तम्भों उत्कीर्ण करवाकर साम्राज्य के अन्दर और सीमावर्ती बाह्य प्रदेशों में स्थापित किया। लौरिया नन्दन गढ़, वैशाली, सारनाथ आदि स्थानों पर खड़े अशोक के स्तम्भ आज भी अपनी अद्भुत कलात्मकता, शैली, निर्माण अभियांत्रिकी का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। अशोक के अभिलेख न केवल शिलाओं और पत्थर के पालिशदार शीर्ष युक्त स्तम्भों पर बल्कि गुफाओं में तथा मिट्टी के बर्तनों पर भी खुदे हुए प्राप्त होते हैं। ये भारतीय प्रायद्वीप के सभी भागों के अलावे अफगानिस्तान में भी पाए गए हैं। ये कुल 45 स्थानों पर 182 पाठान्तरों में प्राप्त होते हैं। अभिलेखों की भाषा प्राकृत है, जिन्हें

अधिकांशतः ब्राह्मी लिपि में और कुछ आरामाइक, खरोष्ठी एवं यूनानी लिपियों में उत्कीर्ण किया गया है। अपने अभिलेखों से अशोक ने कबीलाई समुदायों तथा सीमावर्ती राज्यों को भी अपने नैतिक आचारमूलक आदर्शों का संदेश दिया। इन अभिलेखों में राजा को पिता मानकर उनके संदेशों तथा आदेशों के अनुपालन का आग्रह किया। इस प्रकार अशोक ने अपने संदेशों जिन्हें 'धम्म' कहा गया, के माध्यम से युद्ध विजय के स्थान पर धम्म विजय की नीति अपनायी। अभिलेखों के प्रसारण के अलावे उसने इसके प्रचार एवं क्रियान्वयन के लिए साम्राज्य के अन्दर धर्माधिकारियों की नियुक्ति की उन्हें नियमित तौर पर गतिमान बने रहने का आदेश दिया। धम्म के अनुपालन के लिए अशोक ने बार-बार धमकाया कि सामाजिक व्यवस्था और धम्म (नैतिक नियमों) का उल्लंघन करने पर बुरे परिणाम होंगे। महामात्यों तथा राजुकों (धर्माधिकारियों) को पुरस्कार और दंड दोनों का अधिकार दिया गया। पश्चिमी देशों और यूनान में अशोक ने धर्म प्रचारक भेजे। इस प्रकार उनकी धम्म नीति का स्वरूप राष्ट्रीय और वैश्विक दोनों था।

साम्राज्य के अन्दर अशोक के राजमार्गों का संजाल फैला दिया जिसके किनारे पर छायादार पेड़ लगाए गए और कुएँ खुदवाए गये। नियमित अन्तराल पर सरायों और औषधालयों का निर्माण किया गया। साम्राज्य के अन्दर पशु-पक्षी की हिंसा पर रोक लगा दी। राजधानी में सप्ताह में एक दिन मांसाहार को निषिद्ध कर दिया गया। पशुओं की रक्षा के लिए भी पशु औषधालयों का निर्माण किया गया। उसने ऐसे तड़क-भड़क वाले सामाजिक समारोहों पर भी रोक लगा दी जिनमें लोग रंगरेलियां मनाते थे। स्वयं सम्राट अशोक धम्म प्रचार और अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए धर्म यात्राएं करता था, जिससे राजा और प्रजा के बीच सकारात्मक संवाद कायम हुआ। इतिहासकार आर. एस. शर्मा के शब्दों में "अशोक ने लोगों को 'जियो और जीने दो' का पाठ पढ़ाया। उसने जीवों के प्रति दया और बांधवों के प्रति सद्व्यवहार की सीख दी।"

प्रायः अशोक की धम्म विजय की शान्तिवादी नीति की आलोचना की जाती है और मौर्य साम्राज्य के विघटन का उत्तरदायी माना जाता है, लेकिन ऐतिहासिक आधार पर इसे सिद्ध नहीं किया जा सकता है। हृदय परिवर्तन के बावजूद उसने कलिंग पर आधिपत्य स्थापित किया। मौर्यों की विशाल सेना प्रभावी बनी रही। अपने पूरे साम्राज्य पर उसका पूर्ण नियंत्रण बना ही नहीं रहा बल्कि धर्म महामात्य और राजुक जैसे पदाधिकारियों के माध्यम से अशोक का नियंत्रण एवं प्रभाव सर्वव्यापी हो गया। यह कहा जा सकता है कि अशोक का अपनी प्रजा के भौतिक जीवन ही नहीं, कल्याणकारी आचार-व्यवहार पर अर्थात् तन ही नहीं मन पर भी प्रभाव कायम हो गया, जो विश्व इतिहास में अपने तरह का अकेला दृष्टान्त है।

अशोक को बौद्ध धर्म का संरक्षक और प्रचारक भी माना जाता है। अशोक ने तीसरे बौद्ध संगीति का आयोजन किया जिसमें बौद्ध क्रियाएं एवं नियमों का संहिताकरण किया गया। अशोक ने बौद्ध धर्म प्रचारकों को दक्षिण भारत ही नहीं बल्कि श्रीलंका, बर्मा आदि देशों में भी भेजा। जाहिर है कि अशोक भारत का पहला व्यक्ति था, जिसने बौद्ध धर्म का अन्तर्राष्ट्रीयकरण किया।

किन्तु देश के अन्दर उसने बौद्ध धर्म को लादने का कोई प्रयास नहीं किया, वह समदर्शी सम्राट था। समान भाव से उसने बौद्ध भिक्षुओं, हिन्दू आचार्यों, परिव्राजकों, आजीवकों आदि को दान दिया। उसने इस मामले में इतनी सतर्कता रखी कि अपने अभिलेखों में निष्ठापूर्वक धम्म का आचरण करनेवालों के लिए निर्वाण (बौद्ध धर्म) की नहीं, अपितु स्वर्ग की कामना की है, जो प्रायः सभी प्रमुख धर्मों में कही गई है।

वस्तुतः सम्राट अशोक भारतीय संस्कृति की जिस उदात्त भाव का महान प्रवक्ता था, जिसमें 'सर्व धर्म समभाव' की बात कही गई। इससे भी एक कदम आगे बढ़ते हुए उसने जीवन के हर क्षेत्र में सहिष्णुता, स्नेह, सद्भाव, प्रेम, दया और पवित्रता एवं अहिंसा का संदेश देकर भारतीय संस्कृति की दिशा एवं स्वरूप को तय कर दिया। वह पहला समन्वयवादी था जिसने विभिन्नताओं से भरे भारत में अपने धम्म के माध्यम से सांस्कृतिक समन्वय एवं संश्लेषण की प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया। सर्वोपरि अशोक ने साम्राज्य को एक भाषा (प्राकृत) एक लिपि (ब्राह्मी) और एक धर्म (धम्म) के सूत्र में बांधकर एक एकसूत्रता की शुरुआत की, जिसकी बुनियाद पर आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का उदय और विकास हुआ। सही अर्थों में देवानांप्रिय अशोक भारत का प्रथम राष्ट्रीय सम्राट था।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर